SHIKSHA BODH

(The Journal of Education and Humanities)

ISSN: 3139-5880 IMPACT FACTOR: 6.50

VOLUME-1|ISSUE-1|Jan-March, 2026

''नई सदी में भारतीय साहित्य और जीवन मूल्य''

डॉ सुनीता गुप्ता

सहायक आचार्य

हिन्दी विभाग

गाँधी महाविद्यालय, उरई -285001

सारांश-

नई सदी का व्यक्ति आंतरिक संघर्ष और मानसिक तनाव से जूझ रहा है जिसे साहित्य में बखूबी दर्शाया गया है साहित्य में वृद्धो की उपेक्षा और उनके अकेलेपन को लेकर चिंता जनक की स्थिति का चित्रण और विकास की अंधी दौड़ में पर्यावरण के विकास को लेकर विनाश को लेकर साहित्य में चिंता और जागरूकता दिख रही है। पश्चिमी प्रभाव के कारण भौतिक सुख सुविधाओं की दौड़ बढी है, जिससे जीवन की सार्थकता का प्रश्न उठा है। संयुक्त परिवारों का टूटना, एकल परिवारों का उदय, साहित्य में महिलाओं को सशक्त और स्वतंत्र दिखाया जा रहा है, लेकिन साथ ही बदलते सामाजिक परिदृश्य में उनकी चुनौतियों को भी रेखांकित किया जा रहा है। प्रवासी भारतीयों द्वारा रचा जा रहा साहित्य और इंटरनेट सोशल मीडिया वह ब्लॉग के माध्यम से साहित्य का नया रूप सामने आया है। वैश्वीकरण और बाजारीकारण के कारण स्वार्थ परता बढी है, जिससे साहित्य में जीवन मूल्यों का ह्रास या प्रमुखता से हुआ है।

शब्द संकेत - *भारतीय साहित्य, जीवन मूल्य , सांस्कृतिक चेतना, मानवीय संवेदना , जीवन मूल्य*

प्रस्तावना -

नई सदी में भारतीय साहित्य और जीवन मूल्य का विषय अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और विविधता ने साहित्य को जीवन के विभिन्न पहलुओं का दर्पण बनाया है। भारतीय साहित्य सदियों से धर्म, दर्शन, नैतिकता, और सामाजिक मूल्यों का संवाहक रहा है। वेद, उपनिषद, महाकाव्य जैसे रामायण और महाभारत में जीवन के आदर्श और नैतिक शिक्षाएं निहित हैं, जो आज भी प्रासंगिक हैं।

नई सदी में, वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति के प्रभाव से भारतीय जीवन शैली में बदलाव आ रहा है। इसके बावजूद, भारतीय साहित्य अपनी जड़ें मजबूत रखता है और आधुनिकता के साथ-साथ पारंपरिक जीवन मूल्यों को समेटकर नई कहानियाँ, कविताएँ और नाटक प्रस्तुत कर रहा है। यह साहित्य न केवल भारतीय समाज के बदलते स्वरूप को दर्शाता है, बल्कि समाज में सहिष्णुता, परिवारिक बंधन, और आध्यात्मिकता जैसे मूल्यों को भी पुनर्जीवित करता है।

नई सदी में भारतीय साहित्य और जीवन मूल्य भारतीय संस्कृति की आत्मा हैं, जो हमें हमारी जड़ों से जोड़ते हुए आधुनिकता के साथ संतुलन बनाने की प्रेरणा देते हैं। नई सदी में भारतीय साहित्य और जीवन मूल्य पर पश्चिमी प्रभाव का भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। वैश्वीकरण और तकनीकी विकास के चलते पश्चिमी विचारधारा, जीवनशैली, और सांस्कृतिक आदतें भारत में तेजी से प्रवेश कर रही हैं। इसके परिणामस्वरूप भारतीय संस्कृति में कई बदलाव देखने को मिलते हैं।

सबसे पहले, परिवार और समाज की पारंपरिक संरचना में परिवर्तन आया है। पहले जहां संयुक्त परिवार प्रमुख था, अब नये दौर में एकल परिवार और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को अधिक महत्व दिया जाने लगा है। इसके साथ ही, व्यावसायिकता और आधुनिक शिक्षा के कारण युवा वर्ग में पश्चिमी सोच और शैली अपनाने की प्रवृत्ति बढ़ी है।

भारतीय साहित्य में भी पश्चिमी साहित्यिक शैलियों, जैसे नाटक, उपन्यास, और समकालीन विचारधाराओं का समावेश हुआ है, जिससे साहित्य का स्वरूप और विषय-वस्तु दोनों में विविधता आई है। हालांकि, इस बदलाव के बावजूद भारतीय साहित्य अपने सांस्कृतिक मूल्यों और सामाजिक संवेदनाओं को जीवित रखने का प्रयास करता है।

इस प्रकार, पश्चिमी प्रभाव ने भारतीय संस्कृति में आधुनिकता और परंपरा के बीच एक नया संतुलन स्थापित किया है, जिससे जीवन मूल्यों और साहित्य दोनों में नवीनता के साथ-साथ संरक्षण भी संभव हो पाया है।

भातीय साहित्य और संस्कृति-

साहित्य और संस्कृति का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। संस्कृति जिन जीवन मूल्यों का संचयन करता है, साहित्य उन जीवन मूल्यों का पोषण करता है। ''साहित्य या संस्कृति के स्थाई और सर्वमानरू मूल्या क्या हैं जिन्हें हम मनुष्यता की मूल्यांकन धरोहर के रूप में सहेज सकें या जिनके कारण मनुष्य सही अर्थों में मनुष्य या उसके द्वारा रची जाने वाली संस्कृति ही सही मायनों में मानव संस्कृति है। वस्तुतः साहित्य और संस्कृति के स्थाई मूल्य वे हैं जिन्हें मनुष्य अपने लम्बे सामाजिक जीवन में प्रकृति तथा परिस्थितियों से संघर्ष करते हुये अर्जित और समृद्ध किया है।''[1] संस्कृति मनुष्य की सामासिक सह अस्तित्व का बोध कराती है। साहित्य और संस्कृति युगानुरूप हमारे अन्तर में विगत युगो को आत्मसात किये रहती है जिससे उनकी निरन्तरता सदा बनी रहती है। ''यही सही है कि युग और व्यवस्थाओ बदलने के साथ हमारा साहित्य और संस्कृति अभिरूचियां हमारी मान्यतायें हमारे चिार विश्वास बदलने हैं और उनके अनुरूप साहित्य का भी नया रूप सामने आता है जो उनकी गतिशीलता उनकी जीवन्तता और उनकी शक्ति का परिचायक है, किन्तु ऐसा नहीं है कि उनके भीतर जो स्थायी तत्व हैं वे समाप्त हो जाते हैं।''[2] चेतना और साहित्य का अन्तर्सम्बन्ध रीतिकाल में क्षीण दिखता है तो इसका कारण तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियां हैं। सत्रहवीं शताब्दी में मुगलों का साम्राज्य हासोन्मुख था, उस समय दिल्ली के तख्त पर शाहजहां आसीन था। देश में सर्वत्र विद्रोह से मुगल शक्ति क्षीण हो गई थी। उत्तरदायित्व विलीन विलासिता के वातावरण में उपजी श्रृंगार भावना नारी देह में सिमट गइ्र थी। ''जैसे सब ओर से चोट खाकर, किसी ओर रास्ता न पाकर, बुद्धि घर के भीतर सिमट गई हो जैसे जीवन के व्यापक क्षेत्रों में मनो विशेष का अवसर न मिलने के कारण मनोरंजन का एक मात्र साधन नारी देह की शोभाओ और चेष्टाओं का अवलोकन कीर्तन तक ही समाबद्ध हो गया हो।''[3] फिर भी इस काल में चिन्तामणि भूषण मतिराम और बिहारी जैसे समर्थ कवि हुये। हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल निश्चित रूप से सांस्कृतिक विमर्श का काल है। इसके भारतेन्दु युग में ही राष्ट्रीयता सामाजिक चेतना के प्रसार में हिन्दी साहित्य के सम्पूर्ण परिवेश को प्रभावित किया। इस कारण इसे पुनर्जागरण काल की संज्ञा दी गई। द्विवेदी युग)जागरण, सुधार , छायावाद और छायावादोत्तर काल में साहित्य और संस्कृति का जनोन्मुखी रूप विकसित (काल-हुआ। औपनिवेशिक दासता, स्वाधीनता संग्राम के इस दौर में अयोध्या सिंह उपाध्याय ''हरिऔध'', मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', महादेवी वर्मा, सुमित्रानन्दन पंत, निराला, प्रसाद, दिनकर, अज्ञेय, मुक्तिबोध, धूमिल, नागार्जुन, प्रेमचन्द्र, जैनेन्द्र आदि कवियों कथाकारों ने भारतीय संस्कृति और साहित्य को मनुष्यता के उदान्त मूल्यों से आबद्ध किया। ''राष्ट्रीय सांस्कृतिक धाराभारतेन्दु काल से- प्रारम्भ होकर द्विवेदी काल, छायावाद काल को पार करती हुई इस काल की कविताओं में समकालीनप्रश्नों-, स्वरों से संयुक्त होकर और भी उदार और वैविध्य पूर्ण हो गई।''[4] साहित्य की प्रवृत्ति किसी जनगण की न होकर उदात्त मानवीय भावनाओं को पल्लवित और पोषण करने की रही है। साहित्य का अर्थ सहित, अर्थात् हित के साथ से है। ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की भावना से संवटित इस सांस्कृतिक चेतना के केन्द्र से आरम्भ से ही मानव मात्र रहा है। प्रसिद्ध रूसी विद्वान को0अ0 अन्तोनोवा, ग्रि00 बोगर्दलेविन और ग्रि-0ग्रि0 कोतोव्स्की के सम्मिलित प्रयास से लिखी गई पुस्तक ''भारत का इतिहास'' की भूमिका मे लिखते हैं -''भारत मानव सभ्यता के उद्गम स्थलों मे एक है। भारत की संस्कृति अनेक जनगण की संस्कृति से घनिष्ठित सम्बद्ध रही है और उनके विकास पर उल्लेखनीय प्रभाव डाला है। किन्तु शताब्दियों के इन पारस्परिक समृद्धिकरण के बावजूद भारत ने अपनी मौलिकता और विलक्षण विशिष्टता को बनाये रखा है। हजारों वर्षों के दौर में प्राचीन तथा मध्यकालीन भारत की विज्ञान साहित्य तथा कला को उपलब्धियों ने दूरदूर के राष्ट्रों के सृजनात्मक चिन्तन को प्रेरित किया है।-''[5] इनका स्पष्ट मत है कि भारत में उत्पन्न हिन्दू तथा बौद्ध धर्मो ने केवल अनेक पूर्ववर्ती सभ्यताओं के विकास ही नहीं वरन् संसार के अनेक अन्य भागों में भी सामाजिक चिन्तनर पर भी प्रभाव डाला। इन्होने भारतीय साहित्य के साथ भारतीय संस्कृति की मुख्य विशेषता को भी रेखांकित किया है -''लगभग दो सौ साल के औपनिवेशिक उत्पीड़न के बावजूद भारतवासी अपनी सांस्कृतिक थाती की परम्पराओ को कायम रख सके हैं। जिसकी मुख्य विशेषः मानवतावाद के उदान्त विचार और शान्ति से गहन अनुराग है।''[6] हिन्दी साहित्य अपने आरम्भ काल से ही भारतीय संस्कृति के मूल तत्वो को अनुप्राणित रहा है। आदिकाल की रचनायें इसका प्रमाण है कि भारत के इतिहास में यह युग हिन्दू शासकों के पराभव था ''हिन्दी साहित्य का आदिकाल उस समय आरम्भ हुआ जब भारतीय संसकृति उत्कर्ष के चरम शिखर पर आरूढ़ हो चुकी थी, और जब उसने भक्तिकाल को अपना दायित्व सौंपा, उस समय भारत में मुस्लिम संस्कृति के स्वर्ण शिखर स्थापित होने लगे थे। इस प्रकार आदिकाल को दो संस्कृतियों एवं हास गाथा कही जा सकता है। भारत में मुस्लिम संस्कृति विकास की-के परिवेश के समय यहां की

विभिन्न जातियों, मतों, आचारों, विचारों आदि में दीर्घकाल से चली आती है। समन्वय की एक व्यापक प्रक्रिया पूर्णता को पहुंचा रही थी।''[7] इस काल की राजनीतिक उथलव स्पष्ट रूप से साहित्य पर भी पड़ा। इस काल मेंपुथल और धार्मिक स्थिति का प्रभा- साहित्य रचना की तीन धाराये थी। पहली धारा संस्कृत साहित्य की परम्परा से, दूसरी धारा प्राकृत एवं अपभ्रंश की थी और तीसरी धारा हिन्दी भाषा की थी, जो अपभ्रंश से प्रभावित की। इस धारा के रचनाकारों ने पाखण्ड और आडम्बर का विरोध कर सहज जीवन मार्ग पर बल दिया। इस काल के कवि सरहपाद लिखते हैं -''नाद न बिन्दु न रवि न शशि मण्डल। चिअराअ सहाबे मूकल। अजुरे उजु छाड़ि मा लेहु रे बंक। निअहि बोहिमा जाहु रे लांक। हाथे रे कांकाण मा लेउ दापण। अपने अपा बुझतु निअन्मण।''[8] इसी काल में खुसरो नाम के कवि हुये थे जिन्हें कुछ लोग अमीर खुसरो से भिन्न व्यक्ति मानते हैं। जन जीवन के साथ घुल मिलकर काव्य रचना करने वाले कवियों में खुसरो का स्थान महत्वपूर्ण है। उनकी पहेलिया गहरा प्रभाव डालने में सक्षम थी -''तरवर से एक चिड़िया उतरी उनने बहुत रिझाया। बाप का उसने नाम जो पूछा आधा नाम बताया। आधा नाम पिता का प्यारा, बूझ पहेली गोरी। अमीर खुसरो यो कहे अपने नाम न बोली निबोरी।''[9] ''आदि काल में जो खुसरो हुये थे उनकी पहेलियां और मुकरियां प्रसिद्ध हैं, जिनमें मनोरंजन और जीवन के हरे व्यंग्य एक साथ मिलते ही हैं। अमीर खुसरो का भाव गहराई की दृष्टि से भले ही महत्व न दिया जाये किन्तु भाषा की दृष्टि से उनकी पहेलियां साहित्य के इतिहास का सदा एक महत्वपूर्ण अंग रहेगी।''[10] हिन्दी साहित्य का पहला प्रेम गाथा को दर्शाने वाला सबसे महाकाव्य, जायसी का पद्मावत इसी हिन्दी नरक द्वन्द्व की कथा कहता है और यह स्मरणीय कि इन सभी प्रसंगों में साम्प्रदायिकता की भावना कहीं नहीं है -''न हिन्दी कवि चन्दबरदायी में, न मुसलमान कवि मलिक मु0 जायसी में, और न हिन्दू ना मुसलमान न कवि कबीरदास में यह हिन्दी काव्य भाषा और साहित्य परम्परा की जीवन्तता का सबसे बड़ा प्रमाण है कि जिसका जन्म हिन्दू मुस्लिम संघर्ष के साथ होता है और जो इस संघर्ष का अनेक रूपों में चित्रण करती है पर जिसकी रचना में साम्प्रदायिक दृष्टि का संस्पर्श भी नहीं होने पाता विरोधों का साधना हिन्दी भाषा का प्रकृति अंग है। यह इस विवेचन के आरम्भ में ही स्पष्ट किया गया है।''[11] आज नई सदी के इस वर्तमान समय में भी सेवा, सतीत्व, परोपकार अतिथेय सत्कार, मातापिता और आचार्यों के प्रति श्रद्धा इत्यादि महत्वपूर्ण म-ूल्य विलासिता के कारण नये रूपो में परिवर्तित कर दिये हैं आजादी के पश्चात् इससे मोह भग की स्थिति पतनशील राजनीति और सामामजिक दुरावस्था को श्रीलाल शुक्ल, राही, मासूम राजा आदि कवि कथाकारों ने चित्रित किया। वर्तमापन में भी भारतीय संस्कृति को आत्मसात कर अपनी रचनाओं को हिन्दी को समृद्ध कर रहे हैं। भारतीय संस्कृति की सामसिक प्रवृत्ति मनुष्यता के प्रति नकारात्मक मूल्यों के प्रतिरोध की रही है और यही प्रवृत्ति वर्तमान हिन्दी के सभी विधाओं मे व्याप्त होती हुई आज नई सदी में भारतीय साहित्य और जीवन मूल्यों को चुनौती देती हुई नजर आ रही है।

सन्दर्भ सूची-

1. दर्शन साहित्य और समाजशिवकुमार मिश्र -, अरूणोदय प्रकाशन 1/2165 पूर्वी रामनगर गली नं0-16 मंडौली रोड शहादरा, दिल्ली-110032, पृ0 17
2. वही, पृ0 16-17
3. हिन्दी साहित्यउद्धव और विकास :'- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन प्राईवेट लिमिटेड 1-बी0 नेता जी सुभाष मार्ग, नई दिल्ली-110002, छठा संस्करण-1990, पृ0 163
4. हिन्दी साहित्य का इतिहासडा - नगेन्द्र, पृ0 608
5. भारत का इतिहासको -0अ0 अन्तोनोवा, ग्रि0म0 बोगर्द लेविन, ग्रि0ग्रि0 कोतोव्स्की प्रगति प्रकाशन मासे, 1984, पृ0 11
6. वही, पृ0 11
7. हिन्दी साहित्य का इतिहासडा - नगेन्द्र, मयूर पेपर बैक्स, ए-95 सेक्टर-5, नोयडा-201301 द्वितीय संस्करण-1991 पृ0 57
8. वही, पृ0 63
9. वही, पृ0 78
10. वही, पृ0 78
11. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकासडा - रामस्वरूप चतुर्वेदी, लोक भारती प्रकाशन, 15-ए, महात्मागांधी मार्ग, इलाहाबाद-1 चतुर्थ संस्करण, 1994 पृ0 43.4